



Journal of INDIAN KNOWLEDGE STUDIES (JIKS)

भारतीय ज्ञान प्रणाली, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं सतत विकास: समग्र मानव कल्याण की दिशा में एक अध्ययन

डॉ अनीता कौशल

असिस्टेंट प्रोफेसर देवनागरी महाविद्यालय मेरठ, kaushalanita034@gmail.com

सारांश

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) हजारों वर्षों से मानव जीवन, प्रकृति और समाज के मध्य संतुलित एवं समन्वित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती रही है। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग तथा प्रशासन सहित अनेक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन ला रही है। साथ ही, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals-SDGs) की प्राप्ति के लिए तकनीकी नवाचार और मानवीय मूल्यों का समन्वय आवश्यक माना जा रहा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण, शासन तथा उद्योग सहित लगभग प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। यद्यपि AI मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक और प्रभावी बना रही है, फिर भी इसके साथ नैतिकता, गोपनीयता, पारदर्शिता, सामाजिक असमानता तथा पर्यावरणीय प्रभाव जैसी अनेक चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) अपने समग्र, मूल्य-आधारित और प्रकृति-केंद्रित दृष्टिकोण के कारण इन चुनौतियों के समाधान हेतु एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है।

यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल सिद्धांतों—जैसे वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, प्रकृति के प्रति सम्मान, नैतिकता, समग्र शिक्षा तथा लोककल्याण—का कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सतत विकास के संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक एवं दार्शनिक मूल्य AI के उत्तरदायी (Responsible AI), समावेशी विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक न्याय को किस प्रकार सुदृढ़ कर सकते हैं।

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) शोध पद्धति पर आधारित है तथा पुस्तकों, शोधपत्रों, नीति दस्तावेजों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भों का अध्ययन करता है। शोध से अपेक्षा है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समन्वय एक ऐसी विकास-परिकल्पना प्रस्तुत करेगा जो केवल तकनीकी प्रगति तक सीमित न होकर मानवीय मूल्यों, पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास को भी समान महत्व प्रदान करे। यह शोध शिक्षा, नीति-निर्माण तथा तकनीकी विकास के क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण को सशक्त बनाने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सतत विकास, नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सतत विकास लक्ष्य (SDGs), समग्र शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण।

ARTICLE HISTORY

Received: 15 September 2026

Revised: 22 September 2026

Accepted: 30 September 2026

Published: 12 October 2026

CITATION

डॉ अनीता कौशल., (2026). भारतीय ज्ञान प्रणाली, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं सतत विकास: समग्र मानव कल्याण की दिशा में एक अध्ययन. *Journal of Indian Knowledge Studies (J. Indian Knowl. Stud.)*, 1(2), 36-42. <https://doi.org/10.71371/jiks.36-42>

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी नवाचार के रूप में उभरकर सामने आई है। AI ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, शासन, वित्त, पर्यावरण संरक्षण तथा अनुसंधान जैसे विविध क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, बिग डेटा तथा स्वचालन (Automation) पर आधारित AI प्रणालियाँ निर्णय-निर्माण, संसाधन प्रबंधन तथा सेवा वितरण को अधिक प्रभावी एवं दक्ष बना रही हैं। यद्यपि AI के बढ़ते उपयोग ने मानव जीवन को सरल एवं सुविधाजनक बनाया है, तथापि इसके साथ नैतिकता, डेटा गोपनीयता, एल्गोरिद्मिक पक्षपात (Algorithmic Bias), पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, रोजगार तथा पर्यावरणीय प्रभाव जैसी अनेक जटिल चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। इसलिए वर्तमान समय में केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित एवं उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Responsible Artificial Intelligence) के विकास की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसका मूल उद्देश्य मानव, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलित, नैतिक एवं समन्वित संबंध स्थापित करना है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, आयुर्वेद, योग, बौद्ध एवं जैन दर्शन सहित भारतीय चिंतन परंपरा में निहित "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वे भवन्तु सुखिनः", "लोकसंग्रह" तथा प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे सिद्धांत सार्वभौमिक कल्याण, सामाजिक न्याय, नैतिक आचरण एवं पर्यावरणीय संतुलन की स्थापना पर बल देते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का यह समग्र दृष्टिकोण आधुनिक तकनीकी विकास को मानवीय संवेदनाओं एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने की क्षमता रखता है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals-SDGs) वर्ष 2030 तक समावेशी, न्यायसंगत एवं पर्यावरण-संतुलित विकास सुनिश्चित करने की वैश्विक रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उत्तम स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु संरक्षण तथा असमानताओं में कमी जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। किंतु इन लक्ष्यों की प्रभावी प्राप्ति तभी संभव है जब AI का विकास नैतिक मूल्यों, पारदर्शिता, समावेशिता तथा मानव-केंद्रित

दृष्टिकोण पर आधारित हो। इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली AI के उत्तरदायी एवं सतत उपयोग के लिए एक सुदृढ़ दार्शनिक एवं नैतिक आधार उपलब्ध कराती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) भी भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समन्वय पर विशेष बल देती है। यह नीति विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ नैतिकता, नवाचार, अनुसंधान एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के विकास की परिकल्पना करती है। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान प्रणाली और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समन्वय केवल तकनीकी प्रगति का माध्यम नहीं, बल्कि समग्र मानव विकास, सामाजिक समावेशन तथा सतत विकास का प्रभावी आधार बन सकता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल सिद्धांतों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मध्य अंतर्संबंध का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करना है कि भारतीय दार्शनिक एवं नैतिक दृष्टिकोण उत्तरदायी AI, सतत विकास तथा समग्र मानव कल्याण की अवधारणा को किस प्रकार सुदृढ़ कर सकते हैं। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षा, नीति-निर्माण एवं तकनीकी विकास के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और सतत विकास (Sustainable Development) का संगम एक ऐसे भविष्य की रूपरेखा तैयार करता है, जहाँ तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्य एक साथ मिलकर काम करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य समग्र मानव कल्याण (Holistic Human Well-being) प्राप्त करना है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System): अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) भारत की प्राचीन एवं समृद्ध बौद्धिक परंपरा का समग्र स्वरूप है, जिसका विकास हजारों वर्षों के अनुभव, चिंतन, अनुसंधान तथा जीवन-व्यवहार के आधार पर हुआ है। यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, नैतिकता तथा सामाजिक व्यवस्था—को वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से निर्देशित करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल आधार "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वे

भवन्तु सुखिनः" तथा प्रकृति और मानव के मध्य संतुलित संबंध की भावना है। यह ज्ञान प्रणाली व्यक्ति, समाज और प्रकृति के समन्वित विकास पर बल देती है तथा भौतिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी समान महत्व प्रदान करती है। इसका स्वरूप बहुआयामी, समावेशी, अनुभवपरक एवं सतत विकासोन्मुख है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जब जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता तथा नैतिक चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली सतत एवं संतुलित विकास का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करती है। योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव विविधता के प्रति सम्मान तथा जीवन मूल्यों पर आधारित इसकी शिक्षाएँ आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन पर विशेष बल दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों का विकास हो सके। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि समग्र मानव कल्याण और सतत विकास की दिशा में एक सशक्त आधार भी है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख स्रोत एवं मूलभूत सिद्धांत

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) का आधार प्राचीन भारतीय ग्रंथों, दार्शनिक परंपराओं तथा लोकज्ञान में निहित है। इसके प्रमुख स्रोतों में वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, स्मृतियाँ, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त लोक परंपराएँ, जनजातीय ज्ञान, कृषि पद्धतियाँ, वास्तुशास्त्र, संगीत, नाट्यशास्त्र तथा हस्तशिल्प भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन सभी स्रोतों में मानव जीवन, प्रकृति तथा समाज के मध्य संतुलन स्थापित करने की समृद्ध परंपरा विद्यमान है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूलभूत सिद्धांत सत्य, अहिंसा, धर्म, करुणा, सह-अस्तित्व, आत्मानुशासन तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधारित हैं। यह प्रणाली ज्ञान को केवल सूचना का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन को श्रेष्ठ बनाने का साधन मानती है। इसमें अनुभव, तर्क, निरीक्षण और व्यवहारिक प्रयोग को समान महत्व दिया गया है। प्रकृति के संरक्षण, संसाधनों के संतुलित उपयोग, नैतिक आचरण तथा समग्र मानव कल्याण को इसके मूल उद्देश्यों में शामिल किया गया है।

वर्तमान समय में ये सिद्धांत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास जैसे क्षेत्रों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली के ये स्रोत और सिद्धांत आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय स्थापित कर मानवता के सतत एवं समावेशी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence): अवधारणा, विकास एवं वर्तमान परिदृश्य

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) कंप्यूटर विज्ञान की वह उन्नत शाखा है, जिसका उद्देश्य ऐसी बुद्धिमान प्रणालियों का विकास करना है जो मनुष्य की तरह सीख सकें, तर्क कर सकें, निर्णय ले सकें तथा समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकें। AI मशीन लर्निंग (Machine Learning), डीप लर्निंग (Deep Learning), प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing) तथा कंप्यूटर विज्ञान जैसी तकनीकों पर आधारित है। इसका उद्देश्य मानव कार्यों को अधिक सटीक, तीव्र एवं प्रभावी बनाना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा वर्ष 1956 में डार्टमाउथ सम्मेलन के दौरान औपचारिक रूप से सामने आई। प्रारंभिक वर्षों में इसका उपयोग सीमित था, किंतु कंप्यूटिंग क्षमता, विशाल डेटा (Big Data) तथा उन्नत एल्गोरिद्म के विकास के साथ AI ने तीव्र गति से प्रगति की। वर्तमान में AI स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग, बैंकिंग, परिवहन, सुरक्षा, ई-गवर्नेंस तथा वैज्ञानिक अनुसंधान सहित लगभग सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वर्तमान परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता वैश्विक आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख आधार बन चुकी है। इसके माध्यम से कार्यों की दक्षता, निर्णय-क्षमता तथा नवाचार में वृद्धि हुई है। साथ ही, डेटा गोपनीयता, नैतिकता, रोजगार, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए AI के विकास और उपयोग में तकनीकी प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों, नैतिक सिद्धांतों तथा सतत विकास के लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

सतत विकास (Sustainable Development): अवधारणा एवं सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का परिचय

सतत विकास (Sustainable Development) वह विकास प्रक्रिया है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों और अवसरों से समझौता नहीं करती। इसका

उद्देश्य आर्थिक प्रगति, सामाजिक समानता तथा पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है। इसी दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals–SDGs) अपनाए, जिनमें वर्ष 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले 17 वैश्विक लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इनमें गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उत्तम स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु कार्रवाई तथा सतत समुदाय जैसे प्रमुख लक्ष्य शामिल हैं। ये लक्ष्य समावेशी, न्यायसंगत और पर्यावरण-अनुकूल विकास के लिए वैश्विक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली, AI एवं सतत विकास के मध्य अंतर्संबंध

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System–IKS), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–AI) तथा सतत विकास (Sustainable Development) एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकृति के संरक्षण, नैतिक मूल्यों, सह-अस्तित्व तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सिद्धांतों पर आधारित है, जबकि AI इन सिद्धांतों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्रभावी रूप से लागू करने की क्षमता प्रदान करती है। AI का उपयोग कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, जल प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण तथा आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में संसाधनों के कुशल उपयोग और बेहतर निर्णय लेने में किया जा सकता है।

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए केवल तकनीकी प्रगति पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक एवं मानवीय दृष्टिकोण भी आवश्यक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली AI को मानव-केंद्रित, उत्तरदायी एवं मूल्य-आधारित दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली के जीवन-मूल्यों, AI की तकनीकी क्षमता तथा सतत विकास के उद्देश्यों का समन्वय समग्र मानव कल्याण, पर्यावरणीय संतुलन और समावेशी विकास की दिशा में एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करता है।

समग्र मानव कल्याण की भारतीय अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा में समग्र मानव कल्याण का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास से है। उपनिषद, भगवद्गीता, योग एवं आयुर्वेद जैसे ग्रंथ संतुलित जीवन, आत्मानुशासन, करुणा, सह-अस्तित्व तथा प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश देते हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे आदर्श समस्त मानवता के कल्याण की भावना को व्यक्त करते हैं। वर्तमान समय में, जब तकनीकी प्रगति के साथ अनेक सामाजिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली के ये सिद्धांत कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं सतत विकास को मानव-केंद्रित, नैतिक तथा समावेशी दिशा प्रदान करते हुए समग्र मानव कल्याण की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं AI का सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System–IKS) तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–AI) का समन्वय सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals–SDGs) की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकृति के संरक्षण, संसाधनों के संतुलित उपयोग, नैतिक जीवन, सामाजिक समरसता तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है। दूसरी ओर, AI डेटा विश्लेषण, पूर्वानुमान, स्वचालन तथा त्वरित निर्णय क्षमता के माध्यम से विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों को अधिक प्रभावी बनाती है। शिक्षा के क्षेत्र में AI व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) को बढ़ावा देती है, जबकि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्यपरक एवं समग्र शिक्षा का आधार प्रदान करती है। स्वास्थ्य क्षेत्र में AI रोगों के शीघ्र निदान में सहायक है तथा आयुर्वेद एवं योग जैसी भारतीय परंपराएँ निवारक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करती हैं। कृषि में AI मौसम पूर्वानुमान, फसल प्रबंधन एवं संसाधनों के कुशल उपयोग में सहयोग देती है, जबकि भारतीय पारंपरिक कृषि ज्ञान पर्यावरण-अनुकूल खेती को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली के मानवीय एवं नैतिक मूल्यों तथा AI की तकनीकी दक्षता का समन्वय सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समावेशन और समग्र मानव कल्याण के लिए एक प्रभावी एवं दीर्घकालिक मॉडल प्रस्तुत करता है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण एवं सुशासन के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System–IKS) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–AI) का समन्वय वर्तमान

समय में सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में एक प्रभावशाली मॉडल के रूप में उभर रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली जहाँ नैतिकता, मानव-केंद्रित विकास, प्रकृति के साथ संतुलन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल देती है, वहीं AI आधुनिक तकनीक के माध्यम से इन मूल्यों को व्यवहार में लागू करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण संरक्षण तथा सुशासन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में इन दोनों का समन्वय समाज के समग्र विकास को गति प्रदान कर सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन पर विशेष बल देती है। AI आधारित स्मार्ट लर्निंग, व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning), वर्चुअल प्रयोगशालाएँ तथा बहुभाषीय डिजिटल शिक्षा विद्यार्थियों के सीखने की गुणवत्ता को बढ़ा रही हैं। वहीं भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षा को केवल रोजगार का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन तथा जीवन कौशल के विकास का साधन मानती है। इन दोनों का समन्वय ज्ञान, कौशल और संस्कार पर आधारित शिक्षा व्यवस्था विकसित कर सकता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में AI रोगों के प्रारंभिक निदान, चिकित्सा अनुसंधान, दवा विकास, टेलीमेडिसिन तथा स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। दूसरी ओर, आयुर्वेद, योग, ध्यान तथा प्राकृतिक चिकित्सा जैसी भारतीय परंपराएँ रोगों की रोकथाम, संतुलित जीवनशैली और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष बल देती हैं। आधुनिक AI तकनीकों के माध्यम से आयुर्वेदिक उपचारों के वैज्ञानिक विश्लेषण, रोग-पूर्वानुमान तथा व्यक्तिगत स्वास्थ्य प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में AI मौसम का पूर्वानुमान, मृदा विश्लेषण, जल प्रबंधन, कीट नियंत्रण तथा फसल उत्पादन बढ़ाने में किसानों की सहायता कर रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक जैविक खेती, वर्षा जल संचयन, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा जैव विविधता के संवर्धन पर बल देती है। इन दोनों का समन्वय पर्यावरण-अनुकूल कृषि, जल संरक्षण तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

सुशासन एवं नीति-निर्माण के क्षेत्र में AI डेटा आधारित निर्णय, पारदर्शिता, डिजिटल प्रशासन, सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता तथा संसाधनों के कुशल प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान देती है। वहीं भारतीय ज्ञान प्रणाली न्याय, लोककल्याण, उत्तरदायित्व, समानता

तथा "सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय" की भावना को शासन का आधार मानती है। इन सिद्धांतों के साथ AI का उपयोग नागरिक-केंद्रित, पारदर्शी एवं उत्तरदायी शासन व्यवस्था को सुदृढ़ कर सकता है। साथ ही, AI समाज के वंचित वर्गों तक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सरकारी सेवाओं की पहुँच बढ़ाकर सामाजिक समावेशन को भी प्रोत्साहित कर सकती है।

अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली के नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीकी क्षमता का समन्वय शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण संरक्षण एवं सुशासन के क्षेत्रों में नवाचार, समावेशिता तथा सतत विकास को बढ़ावा देता है। यह समन्वित दृष्टिकोण न केवल सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में सहायक है, बल्कि समग्र मानव कल्याण, सामाजिक न्याय तथा भविष्य की संतुलित एवं मानव-केंद्रित विकास व्यवस्था के निर्माण का भी सशक्त आधार प्रस्तुत करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता: नैतिक चुनौतियाँ, मूल्य-आधारित विकास, वर्तमान सीमाएँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं, किंतु इसके व्यापक उपयोग के साथ अनेक नैतिक, सामाजिक एवं तकनीकी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा, एल्गोरिदमिक पक्षपात (Algorithmic Bias), पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा रोजगार पर प्रभाव जैसी समस्याएँ आज वैश्विक चिंता का विषय हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS) इन चुनौतियों का समाधान नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं तथा उत्तरदायी तकनीकी विकास के माध्यम से प्रस्तुत करती है। "धर्म", "अहिंसा", "सत्य", "वसुधैव कुटुम्बकम्" तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सिद्धांत AI के विकास को मानव-केंद्रित एवं लोककल्याणकारी दिशा प्रदान करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल उद्देश्य केवल तकनीकी प्रगति नहीं, बल्कि मानव, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करना है। यही कारण है कि AI के विकास में निष्पक्षता (Fairness), पारदर्शिता (Transparency), उत्तरदायित्व (Accountability) तथा समावेशिता (Inclusiveness) जैसे सिद्धांतों को अपनाना आवश्यक है। यदि AI का विकास भारतीय जीवन-मूल्यों के अनुरूप किया जाए, तो यह केवल आर्थिक विकास का साधन न रहकर

सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और समग्र मानव कल्याण का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

इसके बावजूद वर्तमान समय में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। AI के विकास में उच्च गुणवत्ता वाले डेटा की कमी, डिजिटल असमानता, तकनीकी अवसंरचना का अभाव, विशेषज्ञ मानव संसाधनों की कमी तथा नैतिक नियमन (Ethical Regulation) की सीमाएँ इसके व्यापक और समान उपयोग में बाधक हैं। इसके अतिरिक्त AI आधारित निर्णयों में पक्षपात, व्यक्तिगत गोपनीयता का उल्लंघन, साइबर अपराधों का बढ़ता खतरा तथा स्वचालन के कारण रोजगार पर संभावित प्रभाव जैसी समस्याएँ भी गंभीर विचार का विषय हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित अनुसंधान और उसका आधुनिक तकनीक के साथ सीमित समन्वय भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

भविष्य की दृष्टि से भारत के पास AI को मूल्य-आधारित एवं सतत विकासोन्मुख बनाने का एक अनूठा अवसर है। इसके लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार से जोड़ना, AI के लिए स्पष्ट नैतिक दिशा-निर्देश तैयार करना, डेटा संरक्षण कानूनों को सुदृढ़ करना तथा पारदर्शी एवं उत्तरदायी AI प्रणालियों का विकास आवश्यक है। साथ ही, आयुर्वेद, योग, कृषि, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय भाषाओं एवं सांस्कृतिक विरासत के डिजिटलीकरण में AI के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सरकार, शिक्षण संस्थानों, उद्योगों तथा अनुसंधान संगठनों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देकर भारत वैश्विक स्तर पर उत्तरदायी एवं मानव-केंद्रित AI मॉडल प्रस्तुत कर सकता है।

अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समन्वय केवल तकनीकी नवाचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय संतुलन एवं समग्र मानव कल्याण पर आधारित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। यही समन्वित दृष्टिकोण भविष्य में सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति तथा

मानवता के हित में AI के सुरक्षित, न्यायसंगत और प्रभावी उपयोग का आधार बन सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System-IKS), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) एवं सतत विकास (Sustainable Development) का समन्वय वर्तमान समय की वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु एक प्रभावी एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली मानव-केंद्रित विकास, नैतिकता, सह-अस्तित्व, पर्यावरण संरक्षण तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है, जबकि AI आधुनिक तकनीकी क्षमता के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण, सुशासन तथा नीति-निर्माण जैसे क्षेत्रों में नवाचार और दक्षता को बढ़ावा देती है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि केवल तकनीकी प्रगति से सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की पूर्ण प्राप्ति संभव नहीं है। इसके लिए भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा प्रकृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण को AI के विकास और उपयोग में समाहित करना आवश्यक है। इससे AI अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, समावेशी तथा मानव कल्याण उन्मुख बन सकेगी।

अतः भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा और आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करते हुए एक ऐसा विकास मॉडल विकसित करे, जो आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन तथा सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण सुनिश्चित करे। यही समन्वित दृष्टिकोण "समग्र मानव कल्याण" तथा सतत विकास की दिशा में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. संयुक्त राष्ट्र. (2015). हमारी दुनिया का रूपांतरण: वर्ष 2030 के लिए सतत विकास एजेंडा. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र।

3. यूनेस्को. (2021). कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता पर अनुशंसा (Recommendation on the Ethics of Artificial Intelligence). पेरिस: यूनेस्को।
4. नीति आयोग. (2018). राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति – #AIForAll. नई दिल्ली: भारत सरकार।
5. श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर: गीता प्रेस।

6. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन. (2008). प्रधान उपनिषद. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स।
7. फ्रॉले, डेविड. (2001). आयुर्वेद एंड द माइंड (Ayurveda and the Mind). नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
8. रसेल, स्टुअर्ट एवं नॉरविग, पीटर. (2021). आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न एप्रोच (चतुर्थ संस्करण). पियर्सन एजुकेशन।
9. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE). (2021). भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems) प्रभाग. नई दिल्ली।
10. आयुष मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). समग्र स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद. नई दिल्ली: भारत सरकार।

COPYRIGHT:

© 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>